This question paper contains 2 printed pages. Your Roll No. .....

GC

Sl. No. of Ques. Paper : 8226
Unique Paper Code : 12051303
Name of Paper : Hindi Kahani
Name of Course : B.A. (Hons.) Hindi
Semester : III
Duration : 3 hours
Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'उसने कहा था' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

कहानी के तत्वों के आधार पर 'छोटा जादूगर' की समीक्षा कीजिए। 12

2. 'चीफ की दावत' कहानी के आधार पर शामनाथ का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'तीसरी कसम' कहानी के आधार पर हीराबाई की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। 12

3. ' 'परिंदे' प्रेम अभिव्यंजना की कहानी है।' इस कथन पर विचार कीजिए।

अथवा

'सिक्का बदल गया' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। 12

4. 'घुसपैठिये' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

अथवा

'जंगल जातकम' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। 12

5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 9×3=27

(क) "राम-राम यह भी कोई लड़ाई है।" दिन-रात खंदकों में बैठे हड्डियाँ अकड़ गयीं। लुधियाने से दस गुना जाड़ा, और मेह और बरफ ऊपर से। पिंडलियों तक कीचड़ में धँसे हुए हैं। गनीम कहीं दिखता नहीं— घण्टे-दो-घण्टे में कान के परदे फाड़ने वाले धमाके के साथ सारी खंदक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है।

अथवा

राजनीति राष्ट्र की ही नहीं होती, मुहल्ले में भी राजनीति होती है, यह भार स्त्रियों पर टिकता है। कहाँ क्या हुआ, क्या होना चाहिए इत्यादि चर्चा स्त्रियों को लेकर रंग फैलाती है। इसी प्रकार की कुछ बातें हुईं, फिर छोटा-सा बक्सा सरका कर बोली, "इसमें वह कागज हैं जो तुमने मांगे थे, और यहाँ ..... "

P. T. O.

(ख) पैसा देकर हिरामन ने कभी फारबिसगंज में कच्ची-पक्की नहीं खाई। उसके गाँव में इतने गाड़ीवान हैं, किस दिन के लिए? वह छू नहीं सकता पैसा। उसने हीराबाई से कहा, 'बेकार, मेला-बाजार में हुज्जत मत कीजिए। पैसा रखिए।' मौका पाकर लालमोहर भी टप्पर के करीब आ गया। उसने सलाम करते हुए कहा, "चार आदमी के भात में दो आदमी खुशी से खा सकते हैं। बासा पर भात चढ़ा हुआ है .... गौंवाँ-गरामिन के रहते होटिल और हलवाई के यहाँ खाएगा हिरामन?'

अथवा

डॉक्टर का सवाल हवा में टंगा रहा। उसी क्षण पियानो पर शोपां का नोक्टर्न ह्यूबर्ट की उँगलियों के नीचे से फिसलता हुआ धीरे-धीरे छत के अँधेरे में घुलने लगा— मानो जल पर कोमल स्वप्निल उंगलियाँ भँवरों का झिलमिलाता जाल बुनती हुई दूर-दूर किनारों तक फैलती जा रही हों। लतिका को लगा जैसे कहीं बहुत दूर बर्फ की चोटी से परिंदों के झुंड नीचे अनजान देशों की ओर उड़े जा रहे हैं।

(ग) गजाधर बाबू खुश थे, बहुत खुश, पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर होकर जा रहे थे। इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रहकर काटा था। उन अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे। संसार की दृष्टि में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था। उन्होंने शहर में एक मकान बनवा लिया था, बड़े लड़के अमर और लड़की क्रांति की शादियाँ कर दी थीं, दो बच्चे ऊँची कक्षाओं में पढ़ रहे थे।

अथवा

पीपल के जाने के बाद आर्य कुछ देर अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते रहे। उन्होंने एक लम्बी साँस ली और आकाश की ओर सिर उठाया। चुपचाप तारे टिमटिमा रहे थे और पेड़ों की बस्ती में शांति को भंग करती हुई दूर-दूर से कई तरह की आवाजें उठ रही थीं। आर्य को स्यारों का हुआं-हुआं आज कुछ विशेष अच्छा न लगा। वे सोचते हुए अपने चबूतरे के लिए चल पड़े।